भू मि का

हिन्दी भाषा तथा साहित्य के विकास में भारतीय लेखकों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों ने भी पर्याप्त मात्रा में योगदान दिया है। इस प्रबन्ध में केवल ईसाई मिशनारियों द्वारा हिन्दी साहित्य को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में जो योगदान प्राप्त हुआ है, उसका विवेचन प्रमुख रूप से किया गया है। विषय की व्यापकता को देखते हुए उसको काल की विशिष्ट सीमा में बांधना आवश्यक प्रतीत हुआ। अतएव प्रस्तुत प्रबन्ध के अध्ययन की सीमा ई० सन् १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक रखी गयी है।

हिन्दी साहित्य के इतिहासों तथा अन्य ग्रन्थों में जहाँ कहीं ईसाई मिशनारियों के हिन्दी अध्ययन की चर्चा की गयी है वहाँ अधिकांश पुस्तकों में मुख्य रूप से एक ही स्वर रहा है कि मिशनारियों का हिन्दी अध्ययन ईसाई धर्म प्रचार के उद्देश्य से ही किया गया है। परन्तु अनुसन्धान में उपलब्ध तथ्यों पर गंभीरता से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसाई मिशनारियों ने हिन्दी का अध्ययन केवल धर्म-प्रचार के लिए ही नहीं किया अपितु एक भारतीय भाषा के रूप में भी स्वांत:सुखाय किया था। इनमें से ऐसे कई लेखक मिलते हैं कि जिनके कार्य से हिन्दी साहित्य को रचनात्मक सहयोग प्राप्त हुआ है। बाइबिल के अनुवाद के अतिरिक्त शब्दकोश, व्याकरण, इतिहास, पाठ्य-पुस्तकें आदि के क्षेत्र में उनका कार्य विशेष उल्लेखनीय है, जिनका विस्तृत विवेचन इस प्रबन्ध में यथास्थान किया गया है।

ईसाई हिन्दी प्रकाशन संस्थाओं ने हिन्दी गद्य के जन्म से ही जो पुस्तकें छापीं उनका मूल्य भाषा विज्ञान की दृष्टि से तो नि:सन्देह महत्वपूर्ण है। तथापि उन्हीं प्रकाशन संस्थाओं के माध्यम से भारत के कोने कोने में हिन्दी में जो साहित्य

रचा गया उसकी अब तक उपेक्षा की गई है । हिन्दी साहित्य के समीक्षकों को अपनी इस धारणा में परिवर्तन करना होगा कि ईसाई मिशनरियों का हिन्दी साहित्य केवल प्रचार साहित्य है । वस्तुतः सत्य बात तो यह है कि ईसाई मिशनरी लेखकों एवं मिशनरी प्रकाशन संस्थाओं द्वारा केवल धर्म का ही नहीं अपितु जीवन की दैनिक आवश्यकताओं से लेकर वैज्ञानिक विषयों पर भी साहित्य प्रकाशित होता रहा है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध में ईसाई मिशनरियों के साथ ब्रिटिश सरकारी ईसाई अधिकारियों की रचनाओं का भी उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत हुआ । ईसाई धर्म-प्रचारकों और अंग्रेज सरकार के कुछ अधिकारी व्यक्तियों ने हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने में अथक परिश्रम किया है । ब्रिटिश सरकारी अधिकारी भी मसीही धर्म प्रचारकों को सुविधाएँ प्रदान कर सहयोग दिया करते थे । यद्यपि आरंभ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भाषा-नीति ईसाई मिशनरियों के दृष्टिकोण से कुछ समय तक प्रतिकूल रही, फिर भी आगे चलकर सरकार ने अपने इस दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन किया । परिणामस्वरूप हिन्दी अध्ययन क्षेत्र में उनका यह कार्य एक दूसरों का पूरक रहा ।

ईसाई मिशनरियों के द्वारा रचित हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में हिन्दी के विद्वान समीक्षक डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेयजी ने अपने " फोर्ट विलियम कालेज "," उन्नीसवीं शताब्दी ", " आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका " आदि ग्रन्थों में सर्व प्रथम चर्चा उठाई है । उन्होंने हिन्दी के इतिहास के इस उपेक्षित पक्ष की ओर अनुसन्धित्सुओं का ध्यान आकर्षित किया है । उनके पश्चात् डा० जान हेनरी का पाश्चात्य विद्वानों की हिन्दी भाषा और साहित्य से सम्बन्धित कार्य विशेष उल्लेखनीय है । इसके अतिरिक्त स्फुट लेखों के रूप में मिशनरियों के हिन्दी साहित्य का सामान्य परिचय यत्र-तत्र प्राप्त

होता है। परन्तु इन प्रयासों में ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन में जो रचनात्मक योगदान प्राप्त हुआ है उसका सर्वांगपूर्ण विवेचन अपेक्षाकृत कम हुआ है। अतः इस कमी को प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वारा पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दी अध्ययन के क्षेत्र में इस प्रकार का अनुसन्धानात्मक कार्य प्रस्तुत प्रबन्ध के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रथमतः ही प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में ईसाई मिशनरियों का भारत में क्रमशः आगमन काल तथा उनके भारतागमन के समय हिन्दी भाषा और साहित्य की स्थिति का विवेचन किया है। उपलब्ध अद्यावत सूचनाओं एवं सामग्री के आधार पर ईसाई मिशनरियों के भारतागमन के सम्बन्ध में भ्रान्त धारणाओं की परीक्षा कर प्रबल प्रमाणों के आधार पर कुछ निश्चित निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न भी किया गया है जो लेखक का मौलिक कार्य है।

द्वितीय अध्याय में ईसाई मिशनरियों के भारतागमन में उनका दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया है। इस सन्दर्भ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भाषा-नीति तथा फोर्ट विलियम कालेज के सम्बन्ध में पर्याप्त विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है। धर्म-प्रचार के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का महत्व तथा अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी की अधिक उपयुक्तता पर विस्तृत विवेचन किया गया है। ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित प्रचार एवं प्रकाशन संस्थाओं का परिचयात्मक विवरण भी इस अध्याय में दिया गया है।

तृतीय अध्याय में ईसाई मिशनारियों द्वारा लिखित हिन्दी ग्रन्थों के विविध अनुवाद कार्य का विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है। वस्तुत: ईसाई मिशनारियों द्वारा रचित हिन्दी साहित्य प्रधानत: अनूदित रूप में प्राप्य है। बाइबिल के विविध हिन्दी अनुवाद के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों के अनुवाद-कार्य पर भी पर्याप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है। मिशनारियों द्वारा हिन्दी की बोलियों में किए गए कार्य का विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में ईसाई मिशनारियों द्वारा लिखित हिन्दी ग्रन्थों का बहुविध रूप एवं परिचय दिया गया है। विशेषत: विभिन्न प्रकार की कृतियों का वर्गीकरण कर कोश, व्याकरण, इतिहास, काव्य, पाठ्य-पुस्तकें आदि विषयों से सम्बन्धित रचनाओं का अध्ययन किया गया है। ईसाई मिशनारियों द्वारा किए गए कार्य का ठोस स्वरूप इसी अध्याय में परिलक्षित होता है।

पंचम अध्याय में ईसाई मिशनारियों द्वारा लिखित हिन्दी अनुसन्धान विषयक साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। विशेषत: मिशनारियों द्वारा लिखित तुलसी-साहित्य पर समीक्षात्मक कार्य का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। तुलसी-साहित्य के अतिरिक्त अन्य विषयों से सम्बन्धित अनुसन्धान कार्य का अध्ययन भी इस अध्याय में किया गया है। ईसाई मिशनारियों की भाषा, इतिहास, धर्म के सम्बन्ध में अनुसन्धानात्मक रचनाओं की परीक्षा कर इस प्रकार के मौलिक कार्य पर लेखक ने विस्तृत विवेचन किया है। इस प्रकार का शोध-कार्य उनकी क्रियाशिलता का परिचायक है।

षष्ठ अध्याय में ईसाई मिशनरियों द्वारा रचित हिन्दी ग्रन्थों की भाषा का स्वरूप-विवेचन किया गया है। ईसाई साहित्य सम्बन्धी नवीनतम गवेषणाओं से उपलब्ध सामग्री का समावेश कर उनकी भाषा के विकास का पर्याप्त विवेचन किया गया है। विशेषतः इसके अन्तर्गत भाषा के विभिन्न प्रकार के प्रयोगों पर विवेचन प्रस्तुत कर लेखक ने ईसाई मिशनरियों के भाषा-स्वरूप पर प्रचुर मात्रा में प्रकाश डाला है।

सप्तम अध्याय में हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन में ईसाई मिशनरियों का महत्व एवं उनके कार्य का मूल्यांकन किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि ईसाई साहित्य अपना एक स्वतन्त्र ऐतिहासिक महत्व रखता है। उनकी अबतक उपेक्षित कृतियों को वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से प्रकाश में लाना ही अनुसन्धाता का अपना निजी कार्य है।

उपरोक्त अध्याय के अनन्तर इस प्रबन्ध के अन्त में परिशिष्ट दिए गए हैं। इन परिशिष्टों में मिशनरी योगदाताओं का संक्षिप्त परिचय, सहायक पुस्तकों की सूची तथा कतिपय आवश्यक उद्धरण प्रस्तुत किए गए हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण प्रबन्ध में ईसाई मिशनरी योगदाताओं तथा उनकी रचनाओं को प्रकाश में लाने और अनुसन्धान में प्राप्त अज्ञात सामग्री के आधार पर मिशनरियों के हिन्दी अध्ययन के कार्य सम्बन्ध में निश्चित मत प्रस्थापित करने का मौलिक प्रयत्न किया गया है। विशेषतः ईसाई मिशनरियों द्वारा रचित कोश, व्याकरण, इतिहास, पाठ्य-पुस्तकें, काव्य आदि ग्रन्थों से सम्बन्धित शोध-कार्य प्रथम बार ही इस प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

" हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन में ईसाई मिशनरियों का योगदान " से सम्बन्धित अनुसन्धान कार्य के निमित्त लेखक को समस्त भारत में पर्यटन करने का अवसर प्राप्त हुआ । अनुसन्धान के विषय में उपर्युक्त सामग्री उपलब्ध कराने के लिए लेखक को नागपुर, जबलपुर, आगरा, इलाहाबाद, बनारस, पटना, श्रीरामपुर, कलकत्ता, मद्रास, मदुरा, त्रिवेन्द्रम, कन्याकुमारी, पणजी, हैदराबाद, रायबरेली, मथुरा, अलवर, जयपुर, दिल्ली, मसूरी, लुधियाना, बम्बई आदि अनेक स्थानों पर जाना पड़ा, जहाँ के ग्रन्थालयों से उसे पर्याप्त सहायता मिली । विशेषत: उत्तर भारत के गिरजाघरों तथा ईसाई प्रचार केन्द्रों के पुस्तकालयों में मिशनरी हिन्दी ग्रन्थ उपलब्ध हुए । बैंगलूर के बाइबिल सोसाइटी के पुस्तकालय में हिन्दी भाषा में मुद्रित बाइबिल की प्राचीन प्रतियाँ भी उपलब्ध हुईं । अपने विवेचन को स्पष्ट एवं पुष्ट करने के लिए उपरोक्त स्थानों से अनेक ग्रन्थों की सहायता लेखक ने ली है जिनके उल्लेख यथास्थान किए गए हैं ।

कई ईसाई मिशनरी बहुप्रतिभाशाली व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी साहित्य की विविध शाखाओं में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं । उनकी सभी रचनाओं का विस्तृत समीक्षण विस्तारभय के कारण संभव न हो सका । अत: लेखक ने उनकी महत्वपूर्ण एवं प्रातिनिधिक रचनाओं के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है । इस प्रबन्ध को वर्तमान रूप देने में प्राय: दस वर्ष लगे हैं क्योंकि इस अवधि में ईसाई मिशनरियों द्वारा संस्थापित " स्याइसर मेमोरियल कालेज " के हिन्दी विभागाध्यक्ष का उत्तरदायित्व को सम्भालना पड़ा । उपरोक्त ईसाई मिशनरी कालेज में हिन्दी अध्यापन कार्य करते समय लेखक की दृष्टि इस विषय की ओर स्वाभाविकता से आकृष्ट हुई । इस कालावधि में हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० भगीरथ मिश्र के मार्गदर्शन में प्रस्तुत विषय पर अनुसन्धान कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ । डॉ० भगीरथ मिश्रजी के प्रति किन

शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त कर सकता हूँ ? यदि उनका असीम कृपा-भाव तथा सुयोग्य निर्देशन प्राप्त न होता तो शायद ही यह ग्रन्थ पूर्ण हो पाता ।

इस प्रबन्ध की रचना-काल में आदरणीय गुरुदेव डा० भगीरथ मिश्रजी के अतिरिक्त अनेक विद्वान व्यक्तियों की सहायता समय समय पर अनुसन्धाता को मिलती रही । सुविख्यात इतिहासाचार्य पद्मभूषण डा० दत्तो वामन पोतदार, डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० उदय नारायण तिवारी, डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित, डा० विनयमोहन शर्मा, डा० केसरी नारायण शुक्ल, डा० कमलाकान्त पाठक, डा० राममूर्ति त्रिपाठी, डा० मदन गोपाल गुप्त, डा० देवेन्द्रनाथ शर्मा, डा० कल्याणमल लोढ़ा, डा० चन्दुलाल दुबे, डा० कृष्ण दिवाकर आदि साहित्यान्वेषकों ने लेखक के विषय से सम्बन्धित अनेक कठिनाइयों में मार्गदर्शन कर तत्सम्बन्धी अपने मौलिक विचार पत्रों द्वारा तथा प्रत्यक्ष चर्चा के समय प्रस्तुत कर लेखक को उत्साहित किया और उसके अनुसन्धान कार्य में अनेक दृष्टियों से सहयोग दिया है । अतः लेखक इन महानुभावों का सदैव ऋणी रहेगा ।

प्रस्तुत प्रबन्ध टंकित करने के लिए लेखक के सम्मुख कई कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं । विशेषतः पूना जैसे अहिन्दी भाषी स्थान में रहकर प्रस्तुत प्रबन्ध को पूर्णतः टंकित करना बहुत ही कठिन प्रतीत हुआ । हिन्दी शब्दों की वर्तनी में एकरूपता रखने का पर्याप्त प्रयास करते हुए भी कुछ अशुद्धियाँ रह ही गई होंगी जिसके लिए लेखक हिन्दी विद्वानों से क्षमा प्रार्थी है ।

पं० रा० जाधव

दि० २९-४-६८
शिवजयंति

- पंजाबराव रामराव जाधव